डिजिटल युग में आयुर्वेदिक महाविद्यालय के छात्रों के बीच पढ़ने की आदतें: रुझान और व्यवहार में बदलाव

प्राची सिंह, डॉ. अश्वनी यादव

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, सेम ग्लोबल विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश

सारांश:

डिजिटल युग के आगमन से शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी परिवर्तन आए हैं, विशेषकर महाविद्यालय के छात्रों के अपनी पढ़ाई के प्रति दृष्टिकोण में। यह शोध पत्र आयुर्वेदिक महाविद्यालयों में नामांकित छात्रों की अध्ययन आदतों पर प्रकाश डालता है, साथ ही डिजिटल प्रौद्योगिकियों के एकीकरण के कारण उनके सीखने के पैटर्न में उभरे विभिन्न रुझानों और बदलावों पर भी प्रकाश डालता है। संपूर्ण और सावधानीपूर्वक डेटा विश्लेषण करके, इस अध्ययन का उद्देश्य आयुर्वेदिक महाविद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक दिनचर्या पर डिजिटल युग के गहरे प्रभाव की एक सूक्ष्म और व्यापक समझ प्रदान करना है। ये निष्कर्ष न केवल शिक्षा में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर चल रही चर्चा में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, बल्कि शिक्षकों और संस्थानों के लिए व्यावहारिक निहितार्थ भी प्रदान करते हैं क्योंकि वे इस निरंतर विकसित परिदृश्य को संचालित करते हैं।

मुख्य शब्द:- ***पढ़ने की आदतें, छात्र, डिजिटल युग, प्रवृत्ति, व्यवहार.***

प्रस्तावना:-

प्रौद्योगिकी की प्रगति ने शिक्षा के क्षेत्र को पूरी तरह से बदल दिया है, जिससे छात्रों द्वारा शैक्षिक सामग्रियों के साथ बातचीत करने के तरीके में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। आयुर्वेदिक महाविद्यालयों के मामले में, जो परंपरागत रूप से प्राचीन प्रथाओं पर निर्भर रहे हैं, अब उनकी शैक्षिक प्रणालियों में डिजिटल उपकरणों को शामिल करने पर जोर बढ़ रहा है। यह प्रारंभिक वक्तव्य इस बात की व्यापक जांच के लिए आगे बढने की प्रेरणा के रूप में कार्य करता है कि डिजिटल युग ने आयुर्वेदिक महाविद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों को कैसे प्रभावित किया है। हमारा प्राथमिक उद्देश्य सीखने के व्यवहार में विभिन्न क्रम और परिवर्तनों की जांच करना है जो प्रौद्योगिकी शैक्षिक यात्रा का एक अभिन्न अंग बन गए हैं। जैसे ही हम इस जांच को शुरू करते हैं, हमारा अंतिम उद्देश्य मूल्यवान अंतर्दृष्टि को उजागर करना है जो

आयुर्वेदिक अध्ययन के संदर्भ में प्रौद्योगिकी और शिक्षा के बीच अंतरसंबंध की अधिक व्यापक समझ में योगदान देगा।

साहित्य की समीक्षा:-

इस शोध पत्र के लिए साहित्य समीक्षा में पढ़ने से संबंधित विभिन्न पहलुओं का व्यापक रूप से पता लगाया गया, जिसमें पढ़ने के रुझान, छात्रों की पढ़ने की आदतें, डिजिटल युग की तुलना में पारंपरिक छात्रों की पढ़ने की आदतें, पारंपरिक पढ़ने पर डिजिटल युग का प्रभाव शामिल है। आदतें, और डिजिटल सामग्री के संबंध में छात्रों की पढ़ने की आदतें। समीक्षा में पढ़ने से जुड़े विभिन्न व्यवहार संबंधी पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया।

पढ़ना

पढ़ने की क्रिया एक बहुआयामी और संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जो शिक्षार्थियों को दैनिक आधार पर मिलने वाली जानकारी को आसानी से समझने की अनुमति देती है। यह पाठ या अंश जैसे विभिन्न माध्यमों से हो सकता है, जो मुद्रित या गैर-मुद्रित सामग्री में पाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, **मोहम्मद एवं अन्य(2012)** द्वारा किया गया शोध सुझाव देता है कि पढ़ना कुछ लोगों द्वारा एक जटिल प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जो मानव व्यवहार के सभी पहलुओं को शामिल करता है, जिसमें सटीक रूप से पढ़ने, सामग्री की सराहना करने और सार्थक तरीके से दूसरों के साथ जुड़ने के लिए निरंतर निर्देशात्मक मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। संक्षेप में, पढ़ना एक ऐसी गतिविधि है जिसमें लिखित या गैर-मुद्रित सामग्री द्वारा बताए गए अर्थ और संदेश को समझना शामिल है, जिससे पाठक लेखक के इच्छित विचारों को समझ पाते हैं।

ऐसे कई ठोस कारण हैं जिनकी वजह से पढ़ना न केवल आवश्यक है बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए फायदेमंद भी है। पढ़ना नई जानकारी और विचारों के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है, जो हमें अपने ज्ञान को सार्थक और प्रभावशाली तरीके से विस्तारित करने में सक्षम बनाता है। **मोहम्मद एवं अन्य(2012)**के अनुसार इस्लाम में पढ़ना बहुत महत्व रखता है क्योंकि इसे ज्ञान की खिड़की माना जाता है। इसके अलावा, पढ़ना भावनात्मक स्थिरता प्राप्त करने, अवकाश और मनोरंजन का स्रोत प्रदान करने और किताबों के माध्यम से दूसरों के सामने आने वाली चुनौतियों को साझा करने और सीखने के लिए एक मंच प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अतिरिक्त, पढ़ने से हमें नवीनतम वैश्विक विकासों के बारे में अद्यतन और सूचित रहने की अनुमति मिलती है। इस प्रकार, पढ़ना निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण है और हमारे जीवन में कई सकारात्मक प्रभाव लाता है।

विद्यार्थियों की पारंपरिक पढ़ने की आदत

पढ़ने की आदतों के कई पारंपरिक तरीके अभी भी मौजूद हैं जिनका छात्र आज के समाज में पालन करते हैं। **सोंगहुई (2008)** के अनुसार, **"पारंपरिक पढ़ने की आदत"** शब्द उन पुस्तकों को पढ़ने के कार्य को संदर्भित करता है जो केवल भौतिक कागज के रूप में प्रकाशित होती हैं। पुस्तक पढ़ने में संलग्न होने से,

छात्रों को अपने ज्ञान का विस्तार करने और अपने ख़ाली समय का प्रभावी ढंग से उपयोग करने का अवसर मिलता है। जबकि पढ़ना अक्सर एक व्यक्तिगत अनुभव माना जाता है, यह आसपास के वातावरण से भी प्रभावित हो सकता है, जैसे उपयुक्त पढ़ने के स्थानों की उपस्थिति और पढ़ने के लिए खाली समय आवंटित करने का विकल्प **(वालिया और सिन्हा 2014)** इसलिए, छात्रों की पारंपरिक पढ़ने की आदतें मुख्य रूप से पुस्तकों, पत्रिकाओं और पत्रिकाओं सहित मुद्रित या भौतिक सामग्रियों के उपयोग के आसपास घूमती हैं। इसके अतिरिक्त, **डंकन एट अल(2016)** में पाया गया कि जब पढ़ने की समझ के कौशल में सुधार की बात आती है तो किशोर आम तौर पर पारंपरिक पाठ और काल्पनिक पुस्तकों जैसी सामग्री पढ़ने के प्रति अधिक आकर्षित होते हैं। इसके अलावा, शैक्षणिक पुस्तकालय छात्रों के बीच इन पारंपरिक पढ़ने की आदतों को बढ़ावा देने और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संक्षेप में, मुद्रित सामग्री की उपलब्धता और पुस्तकालयों की उपस्थिति यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कारक हैं कि पढ़ने की ये आदतें छात्रों के बीच प्रासंगिक और प्रचलित रहें।

डिजिटल युग

आज की दुनिया में प्रौद्योगिकी में निरंतर प्रगति और डिजिटल प्लेटफार्मों के व्यापक उपयोग ने लोगों को डिजिटल युग में प्रवेश कराया है। परिणामस्वरूप, हमारी पढ़ने की आदतें काफी प्रभावित और परिवर्तित हुई हैं। **अब्दुल करीम और हसन(2007)** के अनुसार, इस बात के सबूत हैं कि हमारी पढ़ने की आदतें डिजिटल पढ़ने की आदत में विकसित हो रही हैं, जो पढ़ने की पारंपरिक धारणा से बिल्कुल अलग है। इसके अतिरिक्त, प्राचीन चीन में कागज और मुद्रण प्रौद्योगिकी के आविष्कार ने हमारे पढ़ने के तरीके में क्रांति ला दी और पढ़ने की हमारी क्षमता में काफी विस्तार किया, जिससे मानव समाज में साक्षरता के विकास में तेजी आई **(सोंगहुई, 2008)** यह स्पष्ट है कि डिजिटल युग ने हमारी पढ़ने की आदतों सहित हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं।

पारंपरिक पढ़ने की आदतें बनाम आधुनिक पढ़ने की आदतें

पारंपरिक पढ़ने और आधुनिक पढ़ने की आदतों की अपनी ताकत और कमजोरियां हैं, जो पढ़ने के मामले में छात्रों की प्राथमिकताओं को प्रभावित कर सकती हैं। पारंपरिक पढ़ने का तात्पर्य भौतिक रूप में पुस्तकों को पढ़ने से है, जबकि आधुनिक पढ़ने की आदतें प्रौद्योगिकी में प्रगति के अनुरूप हो रही हैं। **डेविडोविच एवं अन्य(2016)** के अनुसार छात्र पुस्तकालय में अकादमिक ग्रंथों के संग्रह को पढ़ने के बजाय आसानी से उपलब्ध जानकारी का विकल्प चुन सकते हैं। गैजेट और अन्य तकनीकी उपकरणों का उपयोग व्यक्तियों को पठन सामग्री के प्रकार की परवाह किए बिना, कभी भी और कहीं भी पढ़ने की अनुमति देता है **(समसुद्दीन एवं अन्य 2019)** इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन लेख या ई-पाठ पढ़ने से कागज और हार्डकॉपी कोर्स पैक के उत्पादन और बिक्री जैसी भौतिक लागतों पर पैसा बचाया जा सकता है इन निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि डिजिटल पुस्तकालयों को छात्रों की पढ़ने की आदतों को बढ़ाने के लिए पारंपरिक और आधुनिक दोनों दृष्टिकोणों को शामिल करने के अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

अनुसंधान पद्धति

इस अध्ययन में नियोजित पद्धति एक मात्रात्मक दृष्टिकोण थी, जिसमें संख्यात्मक डेटा या संख्यात्मक पैमाने पर प्रस्तुत जानकारी का विश्लेषण करना शामिल है। आवश्यक डेटा इकट्ठा करने के लिए, Google फ़ॉर्म का उपयोग करके एक सर्वेक्षण-आधारित प्रश्नावली बनाई गई और फिर आयुर्वेदिक कॉलेज मध्य प्रदेश के विभिन्न संकायों के 235 डिप्लोमा छात्रों के एक विविध समूह के साथ साझा किया गया। यह वितरण अंतरिम सत्र के दौरान हुआ, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि अनुसंधान के लिए एक यादृच्छिक नमूना प्राप्त किया गया था।

प्रश्नावली को दो खंडों में विभाजित किया गया है: खंड-अ में प्रतिभागी का नाम, छात्र आईडी, लिंग और संकाय जैसी सामान्य जानकारी होती है, जबकि खंड-ब में प्रतिभागी की पढ़ने की आदतों के बारे में विशिष्ट प्रश्न होते हैं। प्रश्नावली को ऑनलाइन प्रशासित किया गया था, और प्रतिभागियों को इसे स्कैन करने और एक्सेस करने के लिए एक क्यूआर कोड प्रदान किया गया था। इस अध्ययन के लिए डेटा इकट्ठा करने के लिए, प्रतिभागियों को सर्वेक्षण पूरा करने के लिए प्रत्येक तीन दिवसीय सत्र के अंत में लगभग 10-15 मिनट का समय दिया गया था। Microsoft Excel का उपयोग करके प्रतिक्रियाएं एकत्र की गईं और उनका विश्लेषण किया गया।

लिंग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
महिला	141	60%
पुरुष	94	40%

तालिका-1 (अ): उत्तरदाताओं का लिंग(पु./महि.)

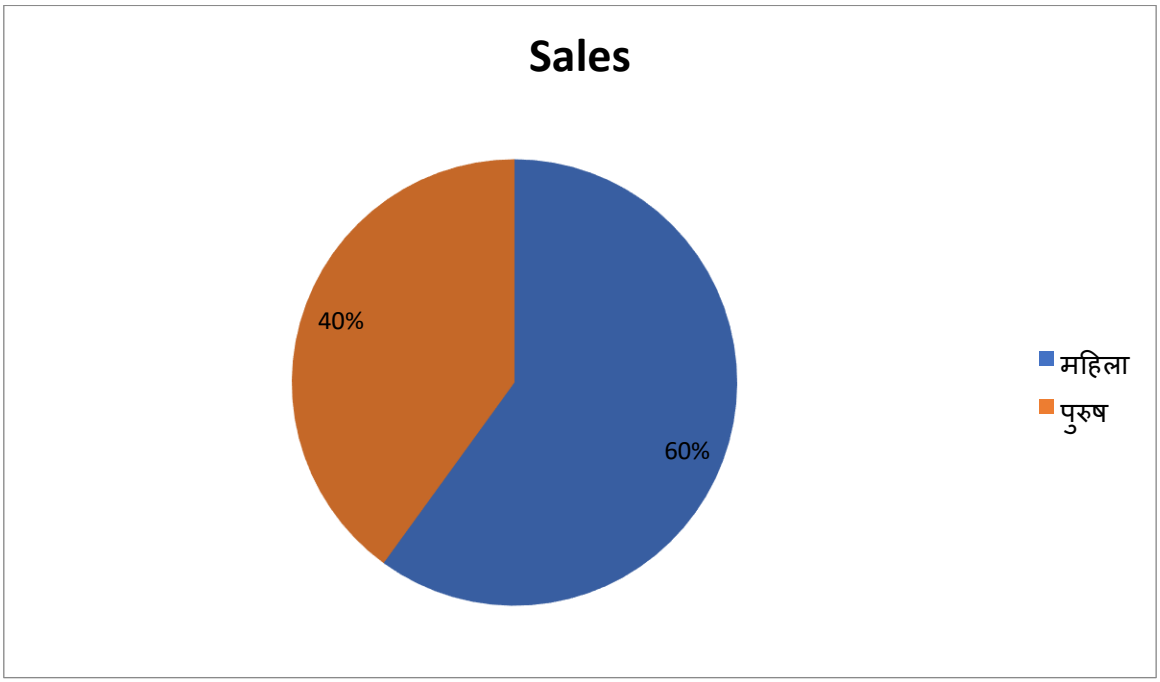

चित्र-1(अ)

चित्र-1(अ) में, डेटा उत्तरदाताओं के लिंग के आधार पर वितरण को दर्शाता है। विश्लेषण से पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं की पहचान महिलाओं के रूप में की गई, जिसमें कुल नमूने का 60% शामिल था। इसके विपरीत, शेष 40% प्रतिभागी पुरुष थे। नतीजतन, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि, जैसा कि अनुमान था, यूआईटीएम समेत मध्य प्रदेश में आयुर्वेदिक कॉलेजों का एक महत्वपूर्ण अनुपात, अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में महिला छात्रों का उच्च नामांकन प्रदर्शित करता है।

आयु	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
20-22	47	20%
23-25	94	40%
26-27	47	20%
28-30	47	20%

तालिका-1 (ब): उत्तरदाताओं की आयु

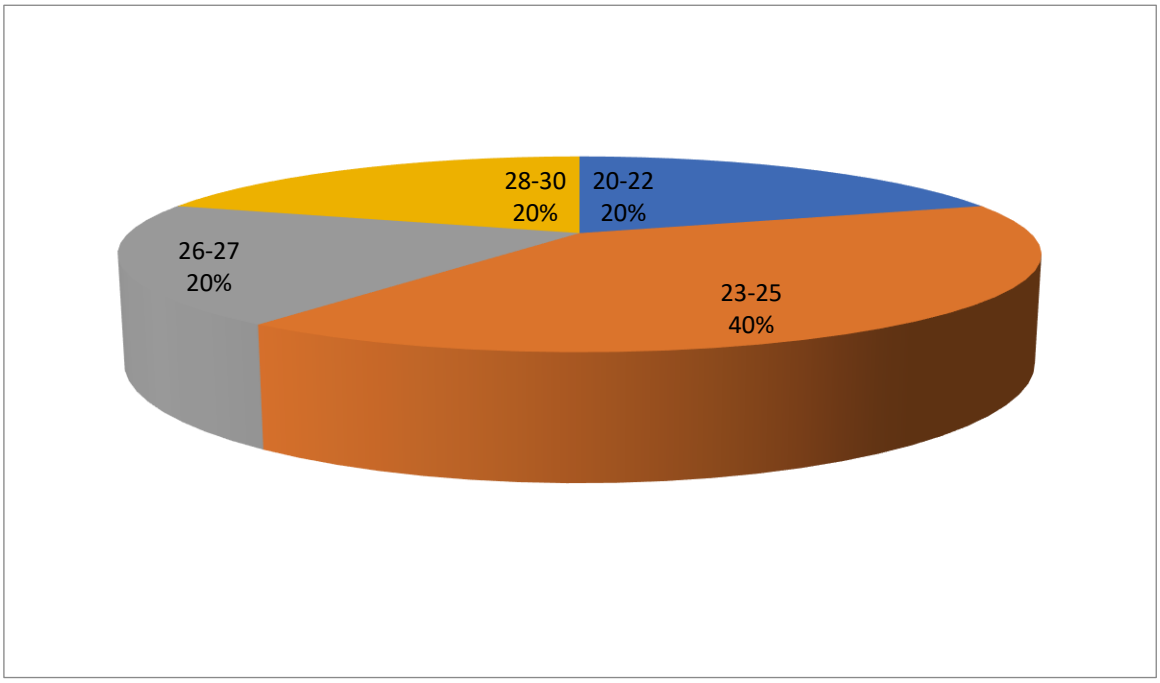

चित्र-1(ब)

उत्तरदाताओं के आयु वितरण से पता चलता है कि उच्च स्तर की समृद्धि वाले व्यक्तियों की सबसे अधिक संख्या 23-25 आयु वर्ग के भीतर पाई जा सकती है, जो पूरे नमूने का महत्वपूर्ण 40% है। इससे पता चलता है कि अध्ययन में भाग लेने वाले अधिकांश छात्र इसी आयु सीमा के अंतर्गत आते हैं, और यह भी उल्लेखनीय है कि इस विशेष श्रेणी में छात्रों की सबसे बड़ी आबादी है। सामान्य आयु वितरण पर विचार करते समय, यह स्पष्ट हो जाता है कि आयुर्वेदिक कॉलेजों में अधिकांश छात्र 20 से 30 वर्ष की आयु के बीच हैं। इसलिए, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आयुर्वेदिक शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों में मध्यम आयु वर्ग सबसे अधिक प्रचलित है। यह विश्लेषण आयुर्वेदिक कॉलेजों में छात्रों की कुल संख्या और उनकी आयु संरचना में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

पठन सामग्री के प्रकार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
मुद्रित पुस्तक	47	20%
ई-पुस्तक	37	16
पत्रिका	32	13
वेबसाइटें	94	40%
समाचार पत्र	25	11

तालिका 2: पठन सामग्री के प्रकार

सर्वेक्षण में शामिल छात्रों के बीच पढ़ने का सबसे लोकप्रिय साधन वेबसाइटें हैं, कुल नमूने में से 40% उनका उपयोग करते हैं। यह उच्च प्रतिशत दर्शाता है कि अधिकांश छात्र डिजिटल स्रोतों को पसंद करते हैं और अध्ययन सामग्री तक पहुंचने के लिए वेबसाइटों पर भरोसा करते हैं। दिलचस्प बात यह है कि 11% छात्र अपनी पढ़ने की जरूरतों के लिए समाचार पत्रों पर निर्भर हैं। इसका तात्पर्य यह है कि कुछ छात्र समाचार प्राप्त करने और नवीनतम जानकारी से अपडेट रहने के लिए समाचार पत्रों को एक मूल्यवान साधन मानते हैं। सबसे पहले, यह स्पष्ट है कि छात्रों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा, 20%, अपने अभ्यास, अध्ययन और अनुसंधान के लिए मुद्रित पुस्तकों पर निर्भर हैं। यह इन छात्रों के लिए जानकारी के प्राथमिक स्रोत के रूप में पारंपरिक पुस्तकों के महत्व पर प्रकाश डालता है। इसके अलावा, यह उल्लेखनीय है कि 13% छात्र विभिन्न पत्रिकाओं से सामग्री पढ़ते हैं। इससे पता चलता है कि छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों से रचनात्मक ज्ञान प्राप्त करने में गहरी रुचि है, क्योंकि पत्रिकाएँ अक्सर विशेष सामग्री प्रदान करती हैं। मुद्रित पुस्तकों के अलावा, एक बड़ी संख्या, 16%, छात्र इंटरनेट के माध्यम से ई-पुस्तकों तक पहुँचते हैं। इससे पता चलता है कि छात्र डिजिटल माध्यमों को भी महत्वपूर्ण मानते हैं, क्योंकि वे अपनी पढ़ाई के लिए ई-पुस्तकों का उपयोग करते हैं। इस तालिका में प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आयुर्वेदिक कॉलेजों में छात्रों की विभिन्न प्रकार की पठन सामग्री के लिए अलग-अलग प्राथमिकताएँ होती हैं। वे विभिन्न स्रोतों से जानकारी इकट्ठा करने की आवश्यकता को पहचानते हैं और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग करने के लिए तैयार हैं।

पढ़ने के प्रारूप का प्रकार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
मुद्रित पुस्तक से पढ़ना	105	45
कंप्यूटर से पढ़ना	59	25
अपने मोबाइल फ़ोन से पढ़ना	71	30

तालिका-3: पठन सामग्री के प्रकार

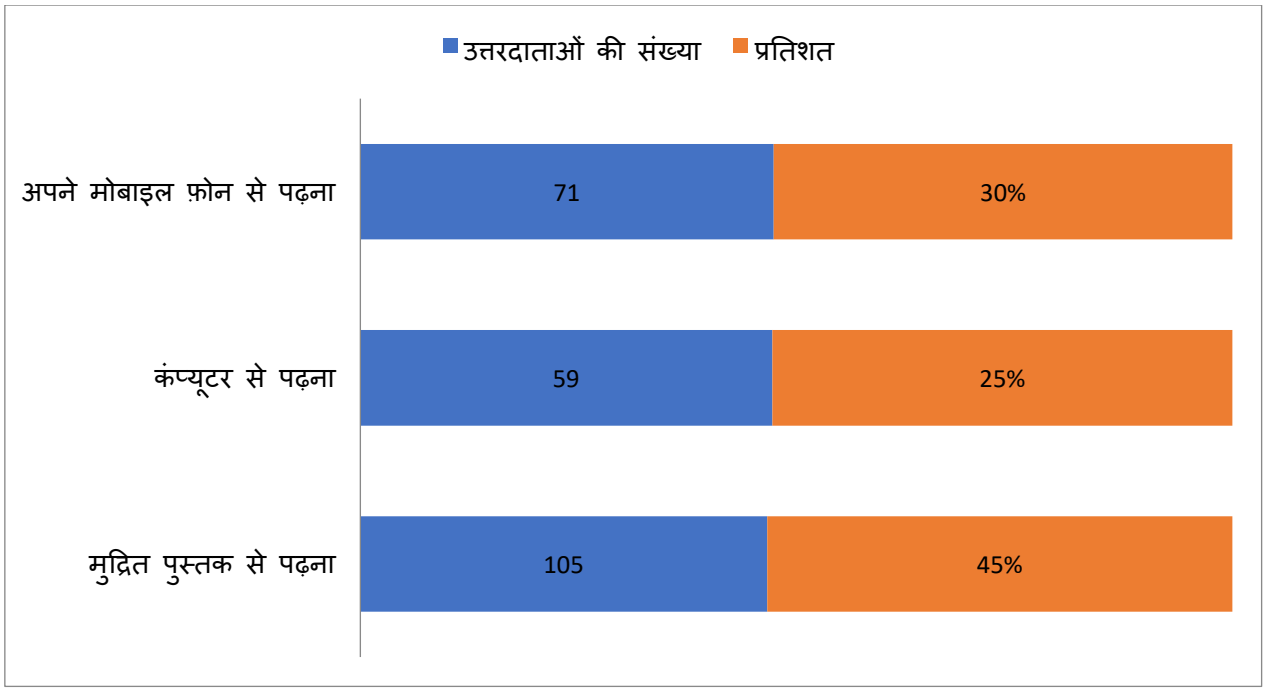

चित्र-3 पढ़ने के प्रारूप का प्रकार

यह तालिका आयुर्वेदिक कॉलेज के छात्रों के बीच पढ़ने की प्राथमिकताओं के वितरण को दर्शाती है। 45% छात्र मुद्रित पुस्तकों को अपने अध्ययन के मुख्य स्रोत के रूप में उपयोग करते हैं, जबकि 25% कंप्यूटर का उपयोग करते हैं और 30% मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं। हालाँकि कम छात्र डिजिटल साधनों का उपयोग करते हैं, फिर भी डिजिटल उपकरणों के माध्यम से पढ़ाई को महत्व दिया जा रहा है। यह तालिका अध्ययन के लिए सामग्री के विभिन्न प्रारूपों में उपयोगकर्ता की आदतों और प्राथमिकताओं के बारे में जानकारी प्रदान करती है।

चर्चा:-

डेटा इंगित करता है कि आयुर्वेदिक कॉलेज के छात्र आमतौर पर अध्ययन सामग्री के लिए वेबसाइटों का उपयोग करते हैं, जो ऑनलाइन संसाधनों की लोकप्रियता को दर्शाता है। हालाँकि, मुद्रित पुस्तकें अभी भी छात्रों के एक महत्वपूर्ण हिस्से द्वारा पसंद की जाती हैं, जो पारंपरिक अध्ययन विधियों के महत्व पर प्रकाश डालती हैं। छात्रों के बीच आयु वितरण संतुलित है, जिससे पता चलता है कि डिजिटल डिवाइस का उपयोग किसी विशिष्ट आयु वर्ग तक सीमित नहीं है। अधिकांश छात्र अपनी पहचान महिलाओं के रूप में बताते हैं, जो आयुर्वेदिक कॉलेजों में महत्वपूर्ण लिंग संरचना का संकेत देता है। शिक्षा तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए इस लैंगिक विसंगति के पीछे के कारणों की जांच करना महत्वपूर्ण है। पारंपरिक पढ़ने के तरीके अभी भी छात्रों के बीच प्रचलित हैं, लेकिन मोबाइल फोन और कंप्यूटर पर पढ़ने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, जो प्रौद्योगिकी-सक्षम शिक्षा की ओर बदलाव को दर्शाती है।

निष्कर्ष:-

आयुर्वेदिक कॉलेज की अध्ययन आदतों में डिजिटल उपकरणों का एकीकरण स्पष्ट है, क्योंकि अधिकांश छात्र ऑनलाइन स्रोतों पर भरोसा करते हैं। जबकि पारंपरिक तरीकों का अभी भी उपयोग किया जाता है, डिजिटल

उपकरणों का बढ़ता उपयोग सीखने को दिए जाने वाले महत्व में बदलाव का संकेत देता है। आयुर्वेदिक कॉलेजों में लिंग असंतुलन का मुद्दा शिक्षा और भागीदारी पर महत्वपूर्ण सवाल उठाता है। शिक्षा तक समान पहुंच सुनिश्चित करने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए इस असंतुलन के पीछे के कारणों को समझना महत्वपूर्ण है। आयुर्वेदिक कॉलेजों में छात्र पारंपरिक और डिजिटल अध्ययन विधियों के संयोजन को अपनाते हैं, जो उनकी विविध सीखने की प्राथमिकताओं को पहचानने और पूरा करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। शिक्षा नीति निर्माताओं को इन विभिन्न अध्ययन आदतों पर विचार करना चाहिए और एक संतुलित और सफल शिक्षण वातावरण बनाने के लिए पारंपरिक और डिजिटल दोनों स्रोतों में निवेश करना चाहिए। यह अध्ययन आयुर्वेदिक कॉलेज के छात्रों की बढ़ती अध्ययन आदतों को समायोजित करने और एक समर्पित और समृद्ध शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा नीतियों को अपनाने के महत्व पर जोर देता है।

सन्दर्भ सूची

1. अब्दुल करीम, एन.एस., और हसन, ए.(2007),डिजिटल युग में पढ़ने की आदतें और दृष्टिकोण: मलेशिया में लिंग और शैक्षणिक कार्यक्रम के अंतर का विश्लेषण, इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी, 25(3).
2. Avci, S., & Yüksel, A. (2011). Cognitive and affective contributions of the literature circles method on the acquisition of reading habits and comprehension skills in primary level students. Kuram ve Uygulamada Egitim Bilimleri, 11(3), 1295–1300.
3. Banou, C., Kostagiolas, P. A., & Olenoglou, A. M. (2008). The reading behavioural patterns of the Ionian University graduate students: Reading policy of the Greek academic libraries. Library Management, 29(6–7), 489–503. https://doi.org/10.1108/01435120810894518
4. डाली, के.(2015), पाठकों की सलाह: क्या हम इसे अगले स्तर पर ले जा सकते हैं? पुस्तकालय समीक्षा, 64(4-5), 372-392.
5. अल-सेगयेर, खालिद। (2019),ईएफएल शिक्षार्थियों की उभरती डिजिटल-रीडिंग प्रथाएं और एल2 रीडिंग के विभिन्न पहलुओं पर प्रभावों के बारे में उनकी धारणाएं। पढ़ने का मैट्रिक्स. 23.154-176.